'जो ओटे सो अर्जुन' ये दादी ने चरितार्थ किया

हमने हर पल उसे निहारा, देखा कि कैसे उस महान आत्मा ने अपना जीवन जिया। मुझे भी सेवा हेतु उनका सानिध्य प्राप्त हुआ। जब इस ईश्वरीय यज्ञ का सबसे पहले और विशाल प्रोजेक्ट ज्ञानसरोवर का निर्माण करना तय हुआ तब दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे कहा कि आपको इस कार्य को देखना है। मैंने बिना कुछ सोच-विचार किये दादी जी की बात को स्वीकार कर लिया। जबकि मुझे कंस्ट्रक्शन के सम्बंध में कुछ भी ज्ञान नहीं था।

हमने देखा, उस समय इतने विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण करना, तो सबकुछ चाहिए। लेकिन दादी ने बाबा के निर्देशानुसार सेवाओं के विस्तार को देखते हुए तय किया कि करना ही है।

- ब्र. कु. गंगाधर

दादी जी ने सभा में उद्घोषणा की कि बाबा के दो लाख बच्चे हैं। हर दिन एक रुपया इस प्रोजेक्ट को सफल करने के लिए निर्माण की भंडारी में डालें। दादी जी का बोलना और हम सबका करना। बस, इसी से ही इतना विशाल ज्ञानसरोवर प्रोजेक्ट सहजता से पूर्ण हो गया। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि दादी जी का निश्चय और विश्वास उनके कर्म में दिखाई पड़ता था।

दादी जी ज्ञान का मर्म बड़ी सरलता और सहजता से बताती थीं। ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। जो हमारे में तमोप्रधानता है, उसको परखना और उसे सतोप्रधान बनाना। हमने देखा, दादी जी बाबा के महावाक्य को तीन तीन बार अध्ययन कर उसके गुह्य मर्म समझकर अपने जीवन में उतारती थीं। मुझे याद है कि जब किसी ने कहा कि दादी, फलाने की ये आदत मुझे पसंद नहीं है, तो दादी जी ने कहा कि वो बात तो ठीक है, लेकिन उसकी आदत ठीक न हो और उसकी आदत के अनुरूप हमारी भावनायें बदल जाती हैं तो हम भी ज्ञानी नहीं ठहरे ना! यानि कि उनकी आदत का प्रभाव हमारे पर अगर पड़ता है तो हम उसको कैसे सुधार सकेंगे! हमें तो यह चेक करना है कि मेरे जीवन में भी ये आदतें तो नहीं हैं, उसे चेक कर उसे बदलना है। किसी को बदलने में मेरे संस्कार रुकावट तो पैदा नहीं करते हैं! इसी के लिए तो हमें ज्ञान की शक्ति चाहिए।

हमने दादी जी को हमेशा बाप समान बनकर कर्म करते हुए देखा। दादी जी के जीवन से हमने एक उत्तम ब्राह्मण की छवि देखी। वे हमेशा कहतीं कि हम बाह्मणों का आचरण ही है सबका सुनना, सबका समाना, सबका सहन करना और सबको स्नेह देना। सबको सहन कराना, ये हमारा आचरण नहीं है। सहन करना सीखो, सहन कराना नहीं। दादी के जीवन के इस मंत्र को हमने प्रत्यक्ष रूप में देखा। एक बार की बात है, दादी जी को सभी मिलते थे। एक भाई दादी के पास आकर बहुत ज़ोर ज़ोर से बोलकर अपनी बात कहकर बाहर चला गया। उसके बाद मुझे दादी से मिलना था। जैसे ही मैं दादी जी के कक्ष में मिलने गया, दादी जी एकदम शांत और सौम्यता के साथ बैठी थीं। कारोबार की मैंने बात की। दादी ने बड़े प्यार से मेरी बात को सुना, समझा और समाधान दिया। मैं वापस चला गया। पर मेरे मन में वो बात सारे दिन चलती रही कि वो पहले वाला भाई जो झगड़ा करके या ऊँची आवाज़ में दादी के सामने बोलकर गया। लेकिन दूसरे दिन भी जब मैं दादी के पास कारोबार अर्थ गया तो दादी वैसी ही शांत और सौम्यता की मुद्रा में थीं। मुझे मन ही मन ये उत्तर मिल गया कि महान व्यक्ति के लक्षण क्या होते हैं। दादी जी किसी की कैसी भी बात अपने दिल पर नहीं रखती थीं। दादी जी हमेशा कहती थीं कि या तो बातें अपनी दिल में रख सकती हूँ या बाबा को, क्योंकि दिल तो एक ही है ना! ये हमने दादी के जीवन से हर पल अनुभव किया।

दूसरों के कल्याण के साथ साथ स्व-उन्नति का ख्याल उनके जीवन से झलकता था। जो बाबा ने कहा, वही मुझे करना है, ये दादी के जीवन का लक्ष्य रहा। दादी हमेशा कहती थीं कि कर्मातीत स्थिति का अनुभव अंत में थोड़े ही कर सकेंगे। अंत में तो उड़ जायेंगे। क्या उड़ने के बाद उस अनुभव का वर्णन करेंगे! कर्मातीत अवस्था का आनंद अगर शरीर छोड़ने समय अनुभव में आयेगा तो उसका वर्णन कब और कैसे करेंगे! कोई पूछे, इस स्थिति का अनुभव क्या है? तो क्या हम उसको ये कहें कि जब शरीर छोड़ूं तब कहना। मैं सदा उसी तख्त पर रहूँ जैसे आज भी कर्मातीत हूँ, कल नहीं होऊंगी। उड़ने के बाद तो मैं सुनाउंगी ही नहीं कि मैं कितनी ऊँची स्थिति में हूँ। इससे अच्छा तो मैं वो फल अभी खाऊँ। इसके लिए मैं आत्मा इतनी सम्पन्न रहूँ जो सर्व सम्बंधों, सर्व गुणों, सर्व कलाओं का फल रोज़ खाऊँ। हमें तो इस स्थिति में बहुत मज़ा आता है। महान व्यक्ति अपने भीतरी परिवर्तन को हमेशा प्रथम रखता है और अपने जीवन से दूसरों को प्रशिक्षित करता है, ये हमने दादी में देखा। 'जो ओटे सो अर्जुन' ये हमने दादी के जीवन में देखा और पाया। उनकी पुण्य तिथि पर हम भी ऐसा बनकर दिखायें, यही उनके प्रति हमारा श्रद्धासुमन होगा।

दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया

दादी जी बाबा के निर्देशों को बड़ी तत्परता से अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

दादी प्रकाशमणि को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता सम्पन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुंज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। बारी-बारी से सबकी भोजन बनाने की सेवा आती थी तो अपनी बारी में वे भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थी। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बताए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं। वे सरलता और स्नेह की मूरत बन मम्मा-बाबा तथा सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रहीं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प, बोल में नहीं देखा।

सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया। प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मज़बूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का प्रमुख केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी।

साकार बाबा का प्रतिरूप बन दादी ने सबको दिया भरपूर प्रेम

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा हर बच्चे को बहुत प्यार करते थे। गलती करने वाला भी बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना अहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। मुरली क्लास के अलावा बाबा किसी की भी किसी गलती के बारे में कुछ नहीं बोलते थे। उसी प्रकार दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं।

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूंद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूंदें पड़ रहीं हैं, एक-एक बूंद ज्ञान मोती का रूप धारण करती जा रही है। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा भी इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे, मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चेम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट से जाते थे और हम सभी बच्चे पास पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चेम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दे, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना अहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थी कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन

नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।